

# डॉ. नरेन्द्र कोहली रामकथा आधारित उपन्यासों के पात्रों का चरित्र-चित्रण

अरुंधति मण्डल\*

शोधार्थी, पीएच.डी., हिंदी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट, म.प्र., भारत

Email: arundhatimandal90@gmail.com

सार - डॉ. नरेन्द्र कोहली ने भारतीय साहित्य में रामकथा को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है, जिसमें उन्होंने इसके पात्रों का गहन और मनोवैज्ञानिक चरित्र-चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, और रावण जैसे पात्र पारंपरिक धार्मिक कथाओं के सीमित दायरे से बाहर आकर मानवता, नैतिकता, और समाज की जटिलताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। कोहली ने इन पात्रों के मानसिक संघर्ष, उनके आदर्शों, और उनके निर्णयों की जटिलता को अत्यंत संवेदनशीलता और गहराई से प्रस्तुत किया है। राम का आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में, सीता का साहस और स्वाभिमान, लक्ष्मण का भाई के प्रति अटूट समर्पण, हनुमान की भक्ति, और रावण का जटिल व्यक्तित्व—ये सभी चरित्र उनके उपन्यासों में नई जीवन्तता प्राप्त करते हैं। यह चरित्र-चित्रण न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि समाज और मानव जीवन के शाश्वत और समकालीन मुद्दों पर भी गहन दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। डा. नरेन्द्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों का यह चरित्र-चित्रण भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करता है और आधुनिक पाठकों के लिए प्रेरणादायक बना रहता है। राम परंपरा को उसकी संपूर्णता में समझने के लिए इन परंपराओं का अध्ययन आवश्यक है। इसके अलावा, भारतीय संदर्भ में, जहाँ राम कथा पूरे राष्ट्र के जीवन और विचार में एक गहन भूमिका निभाती है, भारतीय संस्कृति में विविधता में एकता की भावना को बनाए रखने के लिए वाल्मीकि रामायण परंपरा के बाहर के संस्करणों का अध्ययन और प्रचार आवश्यक है। प्रस्तावित शोधपत्र उत्तर पूर्व भारत के रामकथा आधारित साहित्य और कला परंपराओं की जांच करेगा ताकि इस क्षेत्र की सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि और लोकाचार के अनुसार कथा को अनुकूलित करने के विशिष्ट तरीकों की जांच की जा सके जो इसकी विशिष्ट पहचान को दर्शाता है।)

कीवर्ड - लिंग-शक्ति व्यक्तिगत, मिथक, उत्पीड़न, रामायण, हिंदुओं

-----X-----

## परिचय

डा. नरेन्द्र कोहली हिंदी साहित्य के एक प्रमुख साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से भारतीय पौराणिक कथाओं को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है। उनके साहित्यिक योगदान में "रामकथा" पर आधारित उपन्यासों की एक विशेष स्थान है। कोहली ने रामायण के पात्रों का न केवल पुनर्लेखन किया है, बल्कि उन्होंने इन पात्रों के चरित्रों की गहन मनोवैज्ञानिक पड़ताल भी की है।

उनके उपन्यासों में रामायण के प्रमुख पात्रों जैसे राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, रावण, और भरत का चरित्र-चित्रण अत्यंत विस्तृत और सजीव है। कोहली ने इन पात्रों को केवल धार्मिक और ऐतिहासिक संदर्भों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उन्होंने इन्हें मानवीय गुणों, कमजोरियों, संघर्षों और भावनाओं से युक्त जीवन्त व्यक्तित्वों के रूप में चित्रित किया है।

डा. कोहली का लेखन शैली पात्रों के अंदरूनी संघर्षों, उनके आदर्शों और उनके निर्णयों की जटिलता को उजागर करती है, जिससे पाठक उन पात्रों के साथ गहरे स्तर पर जुड़

पाते हैं। रामकथा के ये पात्र, जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं, कोहली की कलम के माध्यम से न केवल इतिहास के पन्नों से जीवित होते हैं, बल्कि आज के समाज और जीवन में भी अपनी प्रासंगिकता को प्रमाणित करते हैं।

रामकथा, या राम की कहानी, ढाई सहस्राब्दियों से लाखों हिंदुओं द्वारा संजोई गई है और उनकी सामूहिक चेतना में गहराई से समाहित है। राम की कहानी की उत्पत्ति उत्तर मध्य भारत की बार्डिक मौखिक संस्कृति में निहित है; हालाँकि, यह महाकाव्य रामायण है, जिसे 5वीं और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व के बीच ऋषि वाल्मीकि ने रचा था, जिसने योद्धा राजा राम की असाधारण कहानी को भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित किया है, जो विष्णु (हिंदू धर्म के सर्वोच्च देवताओं में से एक) के अवतार थे, जो बुराई को हराने और नैतिक व्यवस्था को बहाल करने के लिए धरती पर उतरे थे। इसने दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया की सांस्कृतिक कल्पना में कहानी की केंद्रीयता के कारण लंबे समय में विभिन्न भाषाओं में कई रामायणों की रचना की (रिचमैन, 1991)। राम का जन्म सुदूर प्राचीन काल में कोशल साम्राज्य में एक राजकुमार के रूप में हुआ था, जिसकी राजधानी उत्तर मध्य भारत में अयोध्या थी। मिथिला राज्य की राजकुमारी सीता से विवाह करने के बाद, उन्हें अपनी सौतेली माँ कैकेयी के षड्यंत्र के कारण अपने पिता दशरथ द्वारा वनवास में भेज दिया गया था। सीता और उनके छोटे भाई लक्ष्मण राम के साथ मध्य और प्रायद्वीपीय भारत के विभिन्न जंगलों में भटकते रहे, जब तक कि सीता को लंका के दुष्ट राजा रावण ने अपहरण नहीं कर लिया। राम ने लक्ष्मण और वानरों और भालुओं की सेना की मदद से रावण को मारने के बाद उसे कैद से छुड़ाया। अयोध्या में विजयी वापसी पर राम और सीता को राजा और रानी के रूप में राज्याभिषेक किया गया, लेकिन सीता को एक बार फिर निर्वासित कर दिया गया, इस बार राम ने, जिन्हें उनकी पवित्रता पर संदेह था। वाल्मीकि ने रामायण की रचना की और वाल्मीकि आश्रम में पैदा हुए अपने जुड़वां बेटों लव और कुश को राम के दरबार में इसे गाने के लिए सिखाया।

राम को अपनी गलती का एहसास हुआ जब उन्होंने गाथा सुनी और सीता से वापस लौटने को कहा, लेकिन उसने इसके बजाय धरती में लुप्त हो जाना चुना, जिससे दुखी राम को उसके बिना अयोध्या पर शासन करना पड़ा। राम के कर्मकांड, वनवास से अयोध्या लौटने और वहां उनके द्वारा झोले गए कष्टों और क्लेशों तथा उनके दिव्य पद की प्राप्ति की सामूहिक स्मृति अनेक ग्रंथों और नाट्य प्रदर्शनों,

दृश्य प्रस्तुतियों और हर तरह की कलात्मक प्रस्तुतियों और सबसे अधिक भौतिक स्थानों में उनके अभिनय द्वारा कायम है। विभिन्न शैलियों-कविता, कहानी, पेंटिंग, मूर्तियां और प्रदर्शन-में आदर्श स्थान छवियां कथा संरचना में महत्वपूर्ण हैं और याद रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

आधुनिक रचनाओं में सीता के असहमत स्वर की प्रतिध्वनि है, जहाँ हम सीता के पुराने मॉडल का एक और संस्करण पाते हैं। अनीता देसाई के उपन्यास व्हेयर शैल वी गो दिस समर की नायिका का एक उदाहरण यहाँ दिया जा सकता है। इस अध्ययन में, नायिका सीता पुरुष उत्पीड़न के खिलाफ विद्रोह करने वाली एक पागल चरित्र है, हालाँकि वह अंततः पारिवारिक बंधन को स्वीकार करती है। हम वर्तमान भारतीय अंग्रेजी साहित्य में महिलाओं की अनसुनी आवाज़ को अधिक सुनते हैं। भारतीय अंग्रेजी कलाकारों के विकास में सीता मॉडल ने अलग-अलग अर्थ प्राप्त किए हैं। कैकेयी पर भी गाथाएँ हैं, जैसे कि अमृता श्याम की कैकेयी, और लघु कथाएँ और नाटक जहाँ अहल्या, शूर्पणखा और शंबूक जैसे बदनाम चरित्र सामने आते हैं। आधुनिक दक्षिण भारतीय रचनाएँ ऐसे पात्रों पर अधिक ध्यान केंद्रित करती हैं जिनके साथ दयालुता से पेश आया जाता है। श्री अरबिंदो भारतीय साहित्य को एक सामान्य साहित्य की अभिव्यक्ति के रूप में देखते हैं। हमारे बहुभाषी और बहु-धार्मिक साहित्य में एकजुटता के बुनियादी तार हैं। भारतीय लेखक मिथकों से बच नहीं सकते। अनेक अमूर्त कृतियों में, मिथकीय धार बिना किसी बाधा के अपनी जगह पर आ जाती है, न कि किसी सचेत कलात्मक उपकरण के रूप में। मिथक प्रतीकात्मक, आलंकारिक, प्रतीकात्मक या प्रोटोटाइप विस्तार के रूपों में मौजूद होते हैं। भारतीय अंग्रेजी साहित्य के सभी विद्वानों के कार्यों का अध्ययन एक पेपर के आवरण में करना उचित नहीं है। इसके बाद, विश्लेषक को भारतीय अंग्रेजी लेखकों के विशिष्ट कार्यों का चयन करना था और अध्ययन को कथा, पद्य और शो में रामायण के प्रभावों की ओर इंगित करना था।

### साहित्य की समीक्षा

**मित्तल, स्नेहा और कुमार, संजय (2023)** ऐतिहासिक महाकाव्यों को संस्कृति की आत्मा माना जाता है, जो समझने और लागू करने लायक अनंत मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं को अपने में समेटे हुए हैं। इतिहास से ही रामायण और श्रीमद्भगवद्गीता धार्मिक समझ और मान्यताओं का मूल रहे हैं और साथ ही कठिन समय में

मानव जाति का मार्गदर्शन भी किया है। रामायण के नायक 'भगवान राम' हैं, जिन्हें सम्मानपूर्वक "मर्यादा पुरुषोत्तम" कहा जाता है, जिसका अर्थ है मजबूत नैतिक आधार। इस चरित्र का अध्ययन महाकाव्य के प्रमुख प्रसंगों में अलग-अलग तरीके से किया जा सकता है। धार्मिक पुस्तकों के रूप में काम करने के अलावा, महाकाव्य एक परीक्षित और संकल्पित जीवन शैली के प्रोटोटाइप के लिए आधारशिला का काम करते हैं। इसमें जिम्मेदार, तार्किक, स्वीकार करने वाला, देखभाल करने वाला, प्रशासनिक, प्रेरक, भावनात्मक रूप से स्थिर होना आदि शामिल हैं। यह लेख मनोवैज्ञानिक संदर्भ में इनमें से कुछ पात्रों की अवधारणा प्रस्तुत करता है जो न केवल पाठकों को ऐसे महाकाव्यों और पात्रों की उपयोगिता से अवगत कराता है बल्कि इसमें निहित गहरे मनोविज्ञान को भी दर्शाता है।

**आर., श्याम और ऐथल, श्रीरामन। (2023)** सभी राजा हैं। लेकिन कुछ नियमों का पालन करते हैं और कुछ नियमों को तोड़ते हैं। सवाल यह है कि क्यों? राम और कृष्ण दूसरों, बड़े समूह के लाभ के लिए कार्य करते हैं। रावण और दुर्योधन अपने-अपने राज्यों के नष्ट हो जाने पर भी अपनी महिमा में अधिक रुचि रखते हैं। समानांतर ट्रैक पर, यह लगातार सामाजिक स्थिति के प्रतीक दुर्गा को शक्ति, आंतरिक शक्ति - शारीरिक और मानसिक कौशल से अलग करता है। राम, रावण, कृष्ण और दुर्योधन के माध्यम से सकारात्मक और नकारात्मक नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करना। नेतृत्व की ओर यात्रा 'मैं' से 'हम' की यात्रा है। इस प्रकार, पौराणिक विषयों और प्रबंधन को वर्तमान भौतिकवादी दुनिया से जोड़ना आसान नहीं है। वर्तमान शोध लंका के राजा के माध्यम से व्यवसाय और प्रबंधन के लिए सद्गुण और दुर्गुण नेतृत्व व्यवहार और व्यक्तित्व प्रकारों की अवधारणाओं को प्राचीन भारतीय ग्रंथों से जोड़ता है और संदर्भ देता है। अध्ययन द्वितीयक और प्राथमिक दोनों साक्ष्यों पर आधारित है। इसके अलावा, प्राचीन भारतीय ग्रंथों के साथ व्यापार और प्रबंधन के लिए प्रतिनायक रावण का एक व्यक्तित्व प्रकार (MBTI) था। वर्तमान शोध में शोधकर्ताओं द्वारा इस क्षेत्र में शोध अंतर को समझने का प्रयास किया गया है, इसलिए एक वैचारिक विचार प्रस्तावित किया गया है और शोध आगे बढ़कर महत्व को आगे बढ़ाता है ताकि रामायण के चरित्र का मूल्यांकन करने के लिए संबंधों की डिग्री की खोज की जा सके कि रावण उच्च नैतिक मानकों (रचनात्मक नेतृत्व व्यवहार) और बुरे व्यवहार (विनाशकारी नेतृत्व व्यवहार) को दिखाने वाले व्यवहार को उत्तेजित करता है और प्रतिनायक रावण के

व्यक्तित्व प्रकार (MBTI) की पहचान करता है। पहले के कई अध्ययनों ने साबित कर दिया है कि, भारतीय पौराणिक कथाओं का मूल अच्छाई और बुराई से कहीं अधिक गहरा अर्थ है।

**सिन्हा, अमिता. (2022)** भारत के अयोध्या में विवादित रामजन्मभूमि स्थल को कई वर्षों तक चले मुकदमे और तीन शताब्दियों से अधिक समय तक बाबरी मस्जिद द्वारा इस स्थल पर कब्जा करने के बाद एक हिंदू मंदिर के निर्माण के लिए पुनः प्राप्त किया गया है। इस मंदिर को एक स्मारक परिसर के रूप में पेश किया जा रहा है, जो दिव्य राजा राम में हिंदू आस्था का एक भव्य बयान है। यह स्थल, उनके जन्मस्थान के रूप में अत्यधिक महत्व रखता है, लेकिन इसे एक थीम पार्क के रूप में पेश किया जा रहा है जिसे एक दृश्य तमाशा के रूप में डिज़ाइन किया गया है। लेख वर्तमान में स्मृति पुनर्प्राप्ति और भविष्य के लिए यादों को एनकोड करने की प्रक्रिया के रूप में प्लेसमेंकिंग के विचार पर आधारित साइट डिज़ाइन के लिए एक वैकल्पिक वैचारिक रूपरेखा की रूपरेखा तैयार करता है। राम के जीवन को दर्शाने वाली साहित्यिक और चित्रात्मक कथाओं में स्थान छविाँ सामूहिक स्मृति के निर्माण खंड हैं और अतीत में उनकी समानता में वास्तविक परिदृश्यों को आकार दिया है। वे स्मृति निर्माण और स्मरण के अभिन्न अंग हैं, और इस तरह रामजन्मभूमि को उनके जन्म और निवास के पौराणिक स्थान के रूप में पुनः प्राप्त करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। मंदिर को एक कथात्मक परिदृश्य में स्थापित करने का प्रस्ताव है जो राम के व्यक्तित्व और कर्मों के बारे में बता सकता है, इसकी डिज़ाइन भाषा स्थान छविाँ और अनुष्ठान प्रथाओं से प्रेरित है। राम की कहानी की सामूहिक स्मृति को याद किया जा सकता है और साइट डिज़ाइन में स्मृति के निशानों के प्रवर्धन के साथ पुनर्गठित किया जा सकता है, जो उभरते परिदृश्य कथा को आधार प्रदान करता है।

**भट, शिल्पा. (2021)** सीता की रामायण प्राचीन भारतीय रामायण महाकाव्य का एक ग्राफिक पुनर्कथन है। स्व-व्याख्यात्मक शीर्षक सीता के दृष्टिकोण से महाकाव्य कथा का प्रतिनिधित्व करने का सुझाव देता है, जो लिंग पहलू और सीता-केंद्रित पुनर्कथन की आवश्यकता को उजागर करता है। वैचारिक फ़िलिपिंग कोई नई बात नहीं है जैसा कि यह अध्ययन दिखाएगा और ग्राफिक प्रतिपादन पद्धति इस शैली में योगदान देती है। पुरुष-केंद्रित और पितृसत्तात्मक सांस्कृतिक संकेतों को एनकोड करने के

माध्यम से, रामायण की साजिश को आमतौर पर पुरुषों या 'समाज' के दृष्टिकोण से व्यक्त किया गया है - पतिव्रता, शक्ति और अबला नारी जैसे शब्दों के इस्तेमाल के माध्यम से। यह पूरे विषय के लिए अक्सर रूढ़िवादी लिंगवादी दृष्टिकोण की ओर भी इशारा करता है। इस अध्ययन में, मैं इस बात की वैचारिक संभावनाओं का पता लगाता हूँ कि कैसे अर्नी और चित्रकार एक संशोधनवादी दृष्टिकोण और सीता-केंद्रित पुनर्कथन के माध्यम से रामायण महाकाव्य के प्रतिनिधित्व को फिर से परिभाषित और पलटते हैं। मैं सैद्धांतिक रूप से विवादित शैली को भी देखता हूँ जो मुद्रित शब्द और बंगाली पटुआ पेंटिंग फॉर्म का उपयोग करके साजिश को प्रस्तुत करने की गुंजाइश पैदा करती है।

**सिन्हा, अमिता और कमलापुरकर, शुभदा। (2024)** प्रकृति की पूजा, पौराणिक कथाओं में समाहित है और अनुष्ठानों में भी इसका पालन किया जाता है, यह हिंदू तीर्थयात्रा का एक अभिन्न अंग है। उत्तर प्रदेश में राम के जन्म स्थान अयोध्या में तीर्थयात्रियों और स्थानीय भक्तों के साथ साक्षात्कार से पता चला कि उनकी धारणा पौराणिक कथाओं और विशेष रूप से अयोध्या महात्म्य में स्थान की कहानियों और छवियों से आकार लेती है, जो इस सहस्राब्दी की शुरुआत में संकलित तीर्थयात्री मार्गदर्शिका है। प्रकृति को दैवीय उदाहरण के माध्यम के रूप में 'देखा' जाता है और सांस्कृतिक परिदृश्य को धाम (देवताओं का क्षेत्र) और धरोहर (विरासत) के रूप में माना जाता है, जो राम कथा से जुड़े स्थानों की एक जीवंत सामूहिक स्मृति को मूर्त रूप देता है, जो समय के साथ बार-बार खोया और पाया जाता है। शुभ समय पर दैवीय उपस्थिति द्वारा शुभ बनाए गए स्थानों पर अनुष्ठान प्रथाएँ उस दृष्टि को साकार करती हैं। भक्त तीर्थयात्रा करते समय अर्थों का निर्माण करते हैं और स्थान के प्रति लगाव विकसित करते हैं। अध्ययन के ये निष्कर्ष एक स्थायी और लचीले नियोजन दृष्टिकोण का आधार हो सकते हैं जो सांस्कृतिक परिदृश्य के संरक्षण में तीर्थयात्रियों की 'पवित्र' धारणा को प्राथमिकता देता है।

### राम कथा पर आधारित हिंदी उपन्यासों में युग-चेतना

राम कथा को भारतीय संस्कृति की अमर कथा और रीढ़ कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। राम के मिथक ने भारतीय चिंतन और भारतीय समाज को बहुत गहरे स्तर पर प्रभावित किया है। मैं देखता हूँ कि एक महान चरित्र के रूप में राम के चरित्र में इतना रचनात्मक व्यवहार देखने को मिलता है, जितना किसी अन्य चरित्र में नहीं देखा गया। 'रामायण' से लेकर हाल ही में प्रकाशित उपन्यास 'मालों में विश्वास' तक कवि वाल्मीकि स्वयं को साहित्यिक

तरीके से राम कथा कहने के मोह से नहीं रोक पाए। समकालीन संदर्भ में युग की भावना से प्रेरित होकर लेखकों ने अपनी रचनाओं में समकालीन स्थितियों और मान्यताओं को अवधारणा बनाकर विषय को विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। परिणामस्वरूप रामायण से लेकर 'अभ्युदय', 'आला उंचा' और 'मालों में निवास' तक राम कथा के पात्रों को समय और परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग रूप दिए गए हैं। राम कथा उन सामाजिक, आध्यात्मिक, नैतिक मूल्यों को दर्शाती है, जिन्होंने प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक भारतीय समाज को प्रभावित किया है। जिसमें हमें प्रत्येक काल के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और सौंदर्य बोध से जुड़े प्रश्न और प्रतिप्रश्न मिलते हैं। प्रत्येक कालखंड राम के विकासशील चरित्र की रचना में समाहित है।

राम के प्रगतिशील चरित्र के निर्माण में प्रत्येक युग समाहित है। राम के व्यक्तित्व में व्याप्त विश्वसनीयता और सरलता के साथ-साथ विशालता ही उन्हें लोकगाथा की भूमि पर प्रमुख रूप से स्थापित करती है। दैवीय आचरण में राम शब्द की व्याप्ति, अनेक लोकगाथाओं में रामकथा का सृजनात्मक पृथक्करण तथा भारतीय परम्परा, संस्कृति, विज्ञान आदि के मंगलमय विषयों पर रामकथा का सफल समावेश, वैदिक साहित्य, जैन साहित्य तथा आधुनिक साहित्य में रामकथा की प्रमुखता और विकासोन्मुखता इसके सशक्त प्रमाण हैं।

### रामकथा आधारित हिंदी उपन्यासों में युगबोध का सामाजिक संदर्भ

डा. नरेन्द्र कोहली के रामकथा आधारित हिंदी उपन्यासों में युगबोध का सामाजिक संदर्भ एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो उनके साहित्य को विशिष्ट बनाता है। कोहली ने भारतीय समाज के मूल्यों, आदर्शों, और सांस्कृतिक धरोहर को समकालीन परिप्रेक्ष्य में पुनर्परिभाषित करने का प्रयास किया है। उनके रामकथा उपन्यास केवल पौराणिक कथाओं का पुनर्लेखन नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक और नैतिक मुद्दों पर भी गहरी दृष्टि डालते हैं। डा. नरेन्द्र कोहली ने अपने उपन्यासों में उस युग की सामाजिक संरचना, मान्यताओं और परंपराओं को बारीकी से उकेरा है। उनके द्वारा प्रस्तुत रामकथा केवल त्रेता युग की कहानी नहीं है, बल्कि उसमें आधुनिक युग की चुनौतियों और समस्याओं की झलक भी मिलती है। कोहली ने भारतीय समाज के उस युग के मूल्यों को समकालीन समाज की समस्याओं के संदर्भ में प्रस्तुत किया है,

जिससे पाठक आज के समय के लिए प्रासंगिक संदेश प्राप्त कर सकें।

उनके उपन्यासों में रामायण के पात्रों के माध्यम से नैतिकता, धर्म, और कर्तव्य के प्रश्नों को आधुनिक समाज के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण के लिए, राम का चरित्र मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में प्रस्तुत होता है, जो न्याय, सत्य, और धर्म के मार्ग पर चलते हैं। कोहली ने इस चरित्र के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया है कि नैतिकता और धर्म के आदर्श किसी भी युग में प्रासंगिक और मार्गदर्शक होते हैं। सीता के चरित्र के माध्यम से डा. कोहली ने महिला सशक्तिकरण और समाज में महिलाओं की भूमिका पर भी विचार प्रस्तुत किया है। उन्होंने सीता को केवल एक पतिव्रता के रूप में नहीं, बल्कि एक सशक्त और आत्मनिर्भर महिला के रूप में चित्रित किया है, जो समाज की परंपराओं और अपेक्षाओं से परे जाकर अपने निर्णय स्वयं लेती है। यह चित्रण आज के समय में महिलाओं के अधिकारों और उनकी स्वतंत्रता के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक है।

कोहली के उपन्यासों में राजनीति और सत्ता का भी एक महत्वपूर्ण विमर्श मिलता है। राम, रावण, और भरत के चरित्रों के माध्यम से कोहली ने सत्ता, राजनीति, और नेतृत्व के नैतिक और अमानवीय पहलुओं को उजागर किया है। राम के द्वारा राज्य की सेवा के लिए त्याग और रावण के अहंकारपूर्ण सत्ता के प्रति दृष्टिकोण को आज के राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। डा. नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में मानवता और सामाजिक न्याय के मुद्दों को भी प्रमुखता से उठाया गया है। उन्होंने रामायण के पात्रों के संघर्षों को इस दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है कि वे सामाजिक अन्याय, वर्ग भेद, और असमानता के खिलाफ खड़े होते हैं। राम का वनवास, शबरी का प्रसंग, और विभीषण की भूमिका कोहली के सामाजिक न्याय और मानवता के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं।

डा. नरेन्द्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यास न केवल भारतीय पौराणिक साहित्य की पुनर्व्याख्या हैं, बल्कि वे आज के समाज के लिए नैतिक और सामाजिक मार्गदर्शन भी प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यासों में युगबोध का सामाजिक संदर्भ गहरे और सार्थक तरीके से उभरता है, जिससे पाठक उस समय और आज के समाज के बीच के संबंधों को समझ सकते हैं। उपन्यास में, जब बहुत से लोग राजशाही के अत्याचार, योद्धाओं के महान अत्याचारों और सम्राटों के अत्याचार के खिलाफ विरोध करते थे, तो योद्धा

राक्षस राजा के सामने जबरदस्ती पेश होते थे। यहां तक कि इस व्यक्ति में सम्राट के खिलाफ बोलने की हिम्मत थी, अन्यथा वह एक भयानक व्यक्ति बन सकता था। जब कश्मीर का राजा शक्तिशाली व्यक्ति से अनुमति मांगता है, तो कश्मीर का राजा कहता है, "उसे जेल में डाल दो। और आज किसी से भी किसी भी राजनीतिक मुद्दे पर सवाल नहीं उठाया जाना चाहिए। जो कोई भी राज्य की सुरक्षा के लिए कुछ भी करने की हिम्मत करता है, उस पर मुकदमा चलाया जा सकता है। इसमें दशहरा के राज्य में अत्याचार की 1975 की नीति का घृणित रूप शामिल है। जब उग्रवादियों ने प्रतिबंध पर जोर दिया और सरकार का विरोध किया, तो उन्हें पकड़ लिया गया।

### **रामकथा आधारित हिन्दी उपन्यासों में युगबोध के राजीवक संदेश**

डा. नरेन्द्र कोहली के रामकथा आधारित हिन्दी उपन्यासों में युगबोध का राजीवक (शाश्वत और समयोचित) संदेश उनके साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। उन्होंने पौराणिक कथाओं को न केवल ऐतिहासिक और धार्मिक संदर्भ में प्रस्तुत किया, बल्कि उन्हें वर्तमान युग की समस्याओं और चुनौतियों से जोड़कर, आधुनिक समाज के लिए प्रेरणादायक संदेश दिए हैं। कोहली के उपन्यासों में धर्म और नैतिकता का संदेश एक प्रमुख तत्व है। उन्होंने रामकथा के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया है कि धर्म और नैतिकता किसी भी युग में प्रासंगिक हैं। राम के चरित्र के माध्यम से यह संदेश मिलता है कि सत्य, न्याय, और कर्तव्य पालन जैसे आदर्श सार्वभौमिक और शाश्वत होते हैं, जो हर समय और समाज में मार्गदर्शन करते हैं।

कोहली ने राम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान के पात्रों के माध्यम से कर्तव्य और समर्पण के आदर्शों को उजागर किया है। राम का वनवास, लक्ष्मण का त्याग, और हनुमान का समर्पण यह दर्शाते हैं कि किसी भी समय और परिस्थिति में कर्तव्य और समर्पण सर्वोपरि होते हैं। यह संदेश आधुनिक समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ व्यक्तिगत हितों के बजाय सामूहिक भलाई पर जोर दिया जाना चाहिए। सीता के चरित्र के माध्यम से डा. कोहली ने नारी शक्ति और स्वाभिमान का संदेश दिया है। उन्होंने सीता को एक सशक्त, आत्मनिर्भर और सम्मानित महिला के रूप में प्रस्तुत किया, जो अपने अधिकारों और स्वाभिमान के लिए खड़ी होती है। यह संदेश आज के



समय में नारी सशक्तिकरण और महिलाओं के अधिकारों के संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक है।

डा. कोहली ने राम और रावण के चरित्रों के माध्यम से राजनीति और नेतृत्व के सिद्धांतों पर भी प्रकाश डाला है। राम के नेतृत्व में न्याय, सत्य, और पारदर्शिता की स्थापना होती है, जबकि रावण का चरित्र अहंकार, अधर्म, और अनैतिकता का प्रतीक है। यह संदेश आज के नेताओं और शासकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जो उन्हें नैतिकता और ईमानदारी के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। रामकथा में सामाजिक न्याय और समानता का संदेश भी स्पष्ट रूप से उभरता है। कोहली ने अपने उपन्यासों में उन पात्रों को विशेष स्थान दिया है जो समाज के निम्न वर्गों से आते हैं, जैसे कि शबरी और विभीषण। राम के द्वारा शबरी के जूठे बेर खाना, और विभीषण को लंका का राजा बनाना, सामाजिक समानता और न्याय का प्रतीक है। यह संदेश आज के समाज में वर्ग भेद और असमानता के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण है।

रामकथा हिन्दी उपन्यासों का आधार है। राजीव के युगबोध का प्रसंग - माजी में राजजीव की भूमिका बहुत ही पुण्यशाली है। प्रसिद्ध विचारक ए.बी.एस. लिखते हैं- "मुसलमानों ने समाज का निर्माण उसके अस्तित्व की रक्षा के लिए ही किया तथा समाज को संगठित रूप देने के लिए उन्होंने राज्य की कल्पना की।" 72 भारतीय विचारकों ने इस राज्य संस्था के अस्तित्व को असंभव पाया। मनुष्य, समाज और राज्य के बीच परस्पर सम्बन्ध है।

साहित्य और राजनीति का गहरा सम्बन्ध है। जिस प्रकार साहित्य का मुख्य उद्देश्य प्रचार और लोक चित्रण है, उसी प्रकार राजनीति का मुख्य उद्देश्य प्रचार या लोक कल्याण है। साहित्य समाज और समाज में व्याप्त बुराइयों, समस्याओं और दोषों को उजागर करने का प्रयास करता है। इस प्रकार राजनीति उन बुराइयों और कुरीतियों के विरुद्ध समाज को प्रेरित करके समाज में सुधार लाने का प्रयास करती है। राजनीति समाज को समाज की कुरीतियों और विकृतियों के प्रति जागरूक करने का प्रयास करती है, तो साहित्य उस परिवर्तन की बातों को जन-जन तक बांधकर पहुंचाने का कार्य करता है।

अर्थात् सिंस्कृत होने वाला कोई भी राष्ट्र आभ्यंतरक इवत् अस कहलाने लगता है। संस्कृतवाद मिशन के श्रेष्ठ साधनों का श्रेष्ठ परिणाम। संस्कृतवाद के मुख्य तत्वों में सौन्दर्य बोध, इवत् बोध और अवसक बोध प्रमुख हैं, आध्यात्मिक बोध उनमें से एक प्रमुख है। युगायु रूप संस्कृतवाद में भी

सीता परिवर्तन की प्रदायका है। इन परिवर्तनों के फलस्वरूप शास्त्र अपने मूल रूप में प्राचीन रहते हुए भी सभी कालों के लिए उपयुक्त हैं। एकक परित्याय दृगोचर ओते में सिंस्कृत वातक स्तर पर भारत में सीतीनत्रयोत्तम। हिन्दी उपन्यासकार रामकथा का आधार रामकथा है। पृष्ठभूमि में सामाजिक युगबोध को भी उजागर करने का प्रयास किया गया है।

डा. नरेन्द्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों में युगबोध के राजीवक संदेश अत्यधिक प्रासंगिक हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत ये संदेश न केवल भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संजोने का कार्य करते हैं, बल्कि आधुनिक युग की समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत करते हैं। उनके उपन्यास एक ऐसा साहित्यिक साधन बनते हैं, जो पाठकों को व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन के उच्चतम आदर्शों की ओर प्रेरित करते हैं।

### निष्कर्ष

डा. नरेन्द्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों में पात्रों का चरित्र-चित्रण न केवल साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट है, बल्कि यह पौराणिक कथाओं के पात्रों को एक नई गहराई और आधुनिक संदर्भ में समझने का अवसर भी प्रदान करता है। उनके उपन्यासों में राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान, और रावण जैसे पात्र पारंपरिक भूमिकाओं से बाहर निकलकर मानवता, नैतिकता, और समाज की जटिलताओं को व्यक्त करते हैं।

डा. कोहली ने इन पात्रों के मनोविज्ञान, उनके आंतरिक संघर्ष, और उनकी मानवीय कमजोरियों को बहुत ही संवेदनशीलता के साथ उकेरा है, जिससे वे पाठकों के लिए केवल धार्मिक आदर्श नहीं, बल्कि जीवंत और वास्तविक व्यक्तित्व बन जाते हैं। उन्होंने रामकथा के माध्यम से समाज, धर्म, और नैतिकता के ऐसे आयामों को उजागर किया है, जो आज के युग में भी प्रासंगिक हैं।

समग्र रूप से, डा. नरेन्द्र कोहली के रामकथा आधारित उपन्यासों का पात्र-चित्रण पाठकों को इन चरित्रों के माध्यम से जीवन के गहन और शाश्वत सत्य का दर्शन कराता है। यह चित्रण न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह समाज को नैतिकता, कर्तव्य, और मानवीय मूल्यों के प्रति जागरूक करने में भी सहायक है। उनकी लेखनी ने पौराणिक कथाओं को एक नई जीवंतता प्रदान की है, जो भविष्य में भी पाठकों के लिए प्रेरणादायक बनी रहेगी।

संदर्भ

1. सिन्हा, अमिता और कमलापुरकर, शुभदा। (2024)। स्मृति, पवित्र परिदृश्य और धार्मिक पर्यटन: अयोध्या, भारत में तीर्थयात्रियों की धारणाएँ। 10.4337/9781803928746.00008।
2. भट, शिल्पा. (2021). सीता की रामायण में सीता-केंद्रित संशोधनवाद, डायस्पोरिक अबला नारी की एंड्रोसैट्रिक एन्कोडिंग और अवधारणा। जर्नल ऑफ ग्राफिक नॉवेल्स एंड कॉमिक्स. 13. 1-18. 10.1080/21504857.2021.1885459.
3. सिन्हा, अमिता. (2022). मिथक, स्मृति और स्थान-निर्माण: भारत के अयोध्या में रामजन्मभूमि का पुनः दावा. लैंडस्केप जर्नल. 4. 59-71. 10.3368/lj.41.2.59.
4. आर., श्याम और ऐथल, श्रीरामन। (2023)। लंका के सम्राट और रामायण के खलनायक के माध्यम से रचनात्मक और विनाशकारी नेतृत्व व्यवहार को प्रेरित करना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, टेक्नोलॉजी, एंड सोशल साइंसेज। 262-279। 10.47992/IJMTS.2581.6012.0302।
5. मित्तल, स्नेहा और कुमार, संजया। (2023)। भगवान राम: एक संपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी। 11. 1376-1380। 10.25215/1104.122।
6. अब्राहम, एम.एच., और हार्फम, जी.जी. (2015)। साहित्यिक शब्दावली की शब्दावली (11वां संस्करण)। सेनगेज लर्निंग। बालास्वामी, पी, हिस्ट्रीज़ फ्रॉम बिलो:
7. द कंडम्ड अहल्या, द मोर्टिफाइड अम्बा एंड द ऑप्रेसड एकलव्य (23 दिसंबर, 2013)। SSRN पर उपलब्ध: <https://ssrn.com/abstract=3175708> या <http://dx.doi.org/10.2139/ssrn.3175708>
8. बाल्डिक, सी. (2008)। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ लिटरेरी टर्म्स (तीसरा संस्करण)। ऑक्सफोर्ड यू.पी. बार्थस, आर., और लेवर्स, ए. (1972)। मिथक आज। माइथोलॉजीज़ में (पृष्ठ 107-164)। निबंध, नून्डे प्रेस। भगत, बी. मंडावी की कहानी। भाईचारा। <https://sites.google.com/site/ramabrotherlylove/mantharas-story>.
9. भट्टाचार्य, के.सी. (2011). के.सी. भट्टाचार्य, "रस की अवधारणा" (1930. एन. भूषण और जे.एल. गारफील्ड (संपादक), अंग्रेजी में भारतीय दर्शन: पुनर्जागरण से स्वतंत्रता तक (पृष्ठ 193-206)। ओ.यू.पी. यू.एस.ए. <https://doi.org/10.1093/acprof:osobl/9780199769261.003.0012>
10. चक्रवर्ती, डी. (2000). अल्पसंख्यक इतिहास, अधीनस्थ अतीत। प्रांतीय यूरोप में: उत्तर औपनिवेशिक विचार और ऐतिहासिक अंतर (पृष्ठ 97-114)। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस। देवी, एसआर (2018)। पौराणिक कथाओं में एक दबी हुई मर्मर को चिह्नित करना: केन की सीता की बहन के प्रति एक नारीवादी दृष्टिकोण, 18, 135-146।

Corresponding Author

अरुंधति मण्डल\*

शोधार्थी, पीएच.डी., हिंदी विभाग, सरदार पटेल विश्वविद्यालय, बालाघाट, म.प्र., भारत

Email: arundhatimandal90@gmail.com